P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-8* (Part-1) November- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

चम्बल संभाग के मुरैना जिले के स्वंतत्रता सैनानियों का अनुशीलन

कौशलेन्द्र उपाध्याय
सहायक प्राध्यापक,
इतिहास विभाग,
अम्बाह पीजी कॉलेज,
अम्बाह, मुरैना, म.प्र.

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में देश की स्वतंत्रता के लिए चलाए गये आन्दोलनों में चम्बल संभाग के मुरैना जिले के प्रमुख स्वतंत्रता सैनानियों के द्वारा दिये गए योगदान को वर्णित किया गया है। आज का स्वतंत्र भारत स्वतंत्रता संग्राम सैनानियों की देन है।[1] स्वाधीनता संग्राम में भी चम्बल क्षेत्र के विभिन्न स्थानों एवं विभिन्न जातियों के व्यक्तियों ने भी भाग लिया और देश को स्वतंत्रता प्राप्त हुई शोध पत्र में स्वतंत्रता सैनानियों की जन्म दिनांक, स्थान, प्रमुख कार्य भी वर्णित हैं चम्बल संभाग में फैले हुए विशद आंदोलन एवं स्वतंत्रता सैनानियों की जो अनदेखी की गई उन्हीं आन्दोलनकारियों का विशद वर्णन एवं इनके त्याग और बलिदान का विस्तृत वर्णन शोध पत्र में वर्णित है।

मुख्य शब्द : स्वतंत्रता सैनानी, चम्बल संभाग, स्वाधीनता, बलिदान, अधिवेशन।

प्रस्तावना

भारतीय इतिहास में मध्यप्रदेश का चम्बल संभाग अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। 1947 से पूर्व चम्बल संभाग ग्वालियर राज्य में ही शामिल था। चम्बल क्षेत्र में भिण्ड, मुरैना एवं श्योपुर क्षेत्र आते हैं इस क्षेत्र के मुख्य कस्बे भिण्ड, गोहद, मेहगाँव, लहार, मुरैना, पोरसा, अम्बाह, जौरा, श्योपुर, करहाल एवं विजयपुर है। महान स्वतंत्रता सैनानी पं0 रामप्रसाद बिस्मिल का भी चम्बल क्षेत्र से अत्यन्त महत्वपूर्ण संबंध है।[2]

1857 की क्रान्ति से लेकर 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन तक किसी न किसी रूप में चम्बल क्षेत्र के स्वतंत्रता सैनानियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1857 की क्रान्ति में महान वीरांगना महारानी लक्ष्मीबाई ने कालपी से भिण्ड जिले के ग्राम इन्दुरूखी में एक रात्रि विश्राम किया। यहाँ के स्वतंत्रता सैनानियों ने उन्हें सहयोग का वचन दिया।[3] इन सैनानियों ने अपने वचन का पालन भी किया। आन्दोलन में महारानी लक्ष्मीबाई का साथ देने के कारण इस क्षेत्र के कई व्यक्तियों को अंग्रेजों ने फाँसी पर चढ़ा दिया, ये युवक चम्बल क्षेत्र के सरसई, पाण्डरी, गढ़ीमगद, मधुपुरा, कोट, नयागांव, सगरा, टेहनगुर गांव के निवासी थे। 26 जनवरी 1930 का कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन में भी चम्बल संभाग के युवकों के द्वारा अत्यंत हर्षित होकर भाग लिया गया। तत्कालीन समय में चम्बल क्षेत्र के युवक इस अधिवेशन में भाग लेने के लिए उ0प्र0 के इटावा क्षेत्र में पहुँचे क्योंकि इटावा में भी अनेक स्वतंत्रता सैनानियों ने इन युवकों के हृदय में राष्ट्रप्रेम की भावना, तथा उचित मार्गदर्शन प्रदान करने का कार्य किया। इन मार्गदर्शक स्वतंत्रता सैनानियों में महान क्रान्तिकारी मूलचंद और पं0 ज्योतिशंकर का अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान रहा। भारत छोड़ो आन्दोलन 1942 का प्रभाव जब सम्पूर्ण भारत पर छाया हुआ था। ऐसी स्थिति में चम्बल संभाग के स्वतंत्रता सैनानी भी पीछे नहीं रहे उन्होने भी अपने मन मस्तिष्क पर यह विचार स्थापित किया कि स्वतंत्रता के लिए किए जा रहे इस आंदोलन को सफल बनाना है। आंदोलन को सफल बनाने के लिए ये स्वतंत्रता सैनानी जेल भी गए। इन आंदोलनकारियों में फूल चंद लोहिया, गंगाधर, रघुवीर सिंह कुशवाह, अमर सिंह, दीपचंद पालीवाल, शिवदयाल गुप्ता, नाथूराम सोनी, प्रकाश चन्द्र त्रिपाठी, लल्लूराम झा, बाबूलाल, युगल किशोर, वटेश्वर दयाल शर्मा, हुकुम सिंह, श्री लाल, नाथू राम अग्रवाल आदि का नाम प्रमुख है, जिन्हें अंग्रेजी सरकार के द्वारा जेल में डाला गया।[4]

चम्बल क्षेत्र के मुरैना जिले के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी

श्री रामनिवास शर्मा,

श्री रामनिवास शर्मा जी का भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन्होंने अपने जीवन का प्रमुख लक्ष्य रेखा कि चम्बल क्षेत्र के निवासियों के हृदय में स्वतंत्रता का अलख जागृत किया जाए ताकि देश

को स्वतंत्रता की प्राप्ति हो, इनको अपने स्वप्न को साकार करने में सफलता भी प्राप्त हुई। श्री रामनिवास शर्मा जी का जन्म 10 अक्टूवर, 1914 ई. को अम्बाह तहसील जिला मुरैना में हुआ, इनके पिता का नाम श्री चिंतालाल था। इनकी बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि थी। श्री रामनिवास शर्मा जी बचपन से ही कुशाग्र बुद्धिशील थे। छात्र जीवन से ही इन्होने स्वतंत्रता के प्रति अपनी रूचि जाग्रत की, इसलिए इनका झुकाव कांग्रेस की तरफ हुआ। ये महात्मा गांधी जी के सत्य, अहिंसा, प्रेम आदि विचारों से अत्यधिक प्रभावित थे। 1930 में आपने राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय भाग लेना प्रारंभ कर दिया।[5] 1936 से ग्वालियर राज्य सार्वजनिक सभा के राज्य व्यापी स्वरूप ग्रहण के समय से आपने सक्रिय रूप से भाग लेना प्रारंभ कर दिया। शर्मा जी के द्वारा भारत छोड़ो आन्दोलन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और चम्बल क्षेत्र के नवयुवकों को जागृत किया परिणाम स्वरूप अंग्रेजों की प्रताड़ना के शिकार भी हुए 23 सितम्बर, 1942 से 29 जून, 1943 तक सबलगढ़, ग्वालियर, मुंगावली जेलों में कैद रखे गए। 6 जेल से मुक्त होने के बाद भी इन्होंने मुरैना जिले में स्वाधीनता उत्साह को जारी रखा और मुरैना जिले के लोगों में एक नये उत्साह का संचार भी किया। देश की स्वतंत्रता के पश्चात् भी आपने कांग्रेस पार्टी में महान भूमिका निभाई। प्रदेश कांग्रेस पार्टी में महान भूमिका निभाई। प्रदेश कांग्रेस के उपाध्यक्ष, महामंत्री के पदों पर भी कार्य किया अम्बाह तहसील (जिला–मुरैना) से 1957 में मध्यप्रदेश विधानसभा के सदस्य भी रहे।[7]

श्री राधाचरण शर्मा

श्री रामनिवास जी शर्मा की तरह श्री राधाचरण शर्मा जी का भी भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में चम्बल क्षेत्र की तरफ से महत्वपूर्ण योगदान रहा। आपका जन्म 12 जनवरी, 1915 को मुरैना जिले के अम्बाह तहसील के तौर कुम्भ नामक ग्राम में हुआ था।[8] आपके पिता का नाम पं0 श्री बलदेव प्रसाद शर्मा था। ये मध्यमवर्गीय परिवार से संबंधित थ। इनकी माता का नाम श्रीमती मदन कुंअर था। आपकी माता घरेतू एवं धार्मिक प्रवृत्ति की स्त्री थी। आपन बी0एस0सी0 गणित एवं एल0एल0बी0 की शिक्षा आगरा विश्वविद्यालय से प्राप्त की थी। छात्र जीवन से ही आपके मन मस्तिष्क पर गांधी जी के दर्शन एवं विचारों का गंभीर प्रभाव पड़ा। शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात् आपने कुछ समय के लिए वकालात का कार्य किया। इसके पश्चात् आपका रुझान कांग्रेस की तरफ हुआ क्योंकि तत्कालीन समय में कांग्रेस ही एक ऐसी पार्टी थी जो देश को ब्रिटिश हुकूमत से आजाद कराने के लिए गांधी जी के बताए हुए सत्य, अहिंसा के मार्ग पर चल रही थी।[9] 8 अगस्त, 1982 को भारत छोड़ो आन्दोलन प्रारंभ हुआ आपने भी अपने क्षेत्र में गाँव–गाँव जाकर लोगों के लिए एक जन समूह तैयार किया। आपको स्वतंत्रता आन्दोलन के लिए एक जन समूह तैयार किया। आपको स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेने के कारण 11 अक्टूवर, 1942 से 23 जनवरी, 1943 तक बंदी के रूप में मुंगावली जेल में रखा गया। सन् 1946 में प्रजा सभा के चुनाव हुए आपको कांग्रेस से टिकट प्राप्त हुआ तथा आप विधायक चुने गये। 15 अगस्त, 1947 को देश आजाद हो गया। इसके पश्चात भी आपके द्वारा जनसेवा का कार्य जारी रखा गया अतः जन समर्थन के कारण आप दो–बार लोकसभा के सदस्य बने। प्रथम बार (1952–57) तक ग्वालियर संसदीय क्षेत्र के लिए संसद के सदस्य रहे। पुनः (1957 से 1962) दूसरी बार संसद के सदस्य बने। आप रेलवे जोनल कमेटी (केन्द्रीय सरकार) के सदस्य भी रहे। तत्कालीन समय में इस क्षेत्र में दस्यु समस्या अधिक थी। इस कारण यह क्षेत्र उद्योग विहीन एवं शिक्षा विहीन था। अतः आपके द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति करने का निर्णय लिया गया। 1952 से पूर्व इस क्षेत्र में केवल कक्षा 8 तक की शिक्षा सुविधाऐं थी। आपके द्वारा क्षेत्रीय शिक्षा के प्रचार–प्रसार के लिए ''शिक्षा समिति परगना अम्बाह'' का गठन किया गया। जिसके परिणाम स्वरूप इस क्षेत्र में शिक्षा का विकास हुआ। आपके प्रयास से अम्बाह में स्थापित स्नातकोत्तर महाविद्यालय ग्रामीण अंचल में प्रदेश का एक मात्र स्वशासी महाविद्यालय है। अपनी आदर्श व्यवस्था एवं अनुशासन के लिए यह महाविद्यालय सम्पूर्ण मध्यप्रदेश में अपनी पहचान बना चुका है। आपको आज भी इस क्षेत्र का महान गांधीवादी स्वंतत्रता सैनानी के रूप में याद किया जाता है।

साधू सिंह तोमर

साधू सिंह तोमर का जन्म सामान्य किसान परिवार में हुआ था। गांधी जी के विचारों का अनुसरण करते हुए इन्होने भी अपने क्षेत्र में स्वाधीनता का अलख जागृत किया। मुरैना जिले की पोरसा तहसील में ग्राम मढ़ियापुरा में दिनांक 18.10.1927 को आपका जन्म हुआ। आपके पिता का नाम श्री माधोसिंह तोमर था। आपने अपनी प्राथमिक शिक्षा खेरिया माध्यमिक शाला में पूर्ण की। आपने अपनी प्राथमिक शिक्षा मानहढ़ जिला भिण्ड में पूर्ण की। आप प्रारंभ से ही महात्मा गांधीजी के विचारों से प्रभावित थे। आपने भी अपने जीवन का प्रमुख उद्देश्य देश की आजादी दिलाना सुनिश्चित किया। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आपके द्वारा भाग लिया गया। तंवरघार में राजपूतों को आन्दोलन के लिए तैयार करने व कांग्रेस में उन्हें लाने में श्री साधू सिंह जी का महत्वपूर्ण योगदान रहा। 1944 में उन्होने हरिजनों पर अत्याचार व अन्याय का घोर विरोध किया। इसके उपरांत ब्लॉक काँग्रेस कमेटी के अध्यक्ष एवं परगना कमेटी के मंत्री रहे। 10 वर्ष तक तहसील काँग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रहे। जिला सहकारी बैंक के संचालक पद पर रहे और कई बार जनपद पंचायत अध्यक्ष, मार्केटिंक सोसायटी के अध्यक्ष रहे। 2 बार मण्डी कमेटी पोरसा के अध्यक्ष पद पर रहे।[10]

श्री बाबू लाल शर्मा

श्री बाबूलाल शर्मा जी का भी चम्बल क्षेत्र के युवकों में स्वतंत्रता का अलख जगाने में महत्वपूर्ण योगदान है। आपका जन्म 27 अप्रैल 1925 को मुरैना जिले के इमलिया नामक ग्राम में हुआ था। आपके पिता का श्री सूबालाल शर्मा था। आपके पिता जागीरदार थे अतः आपके परिवार की आर्थिक स्थिति अत्यंत सुद्रण थी। आपकी माता का नाम श्रीमती भगवान बाई था। आपकी माता एक अत्यंत धार्मिक प्रवृत्ति की पारिवारिक महिला थी। आपकी शिक्षा मिडिल तक मुरैना में सम्पन्न हुई थी। मुरैना में शिक्षा प्रापत करने के लिए आप रोज इमलिया

गांव से आते थे। गांधीवादी विचारों का आपके हृदय पर गंभीर प्रभाव पड़ा इसलिए आप कांग्रेस में शामिल हो गए। कांग्रेस में शामिल होने के पश्चात् अपने जनक्षेत्र में जनसाधारण में गांधीवादी विचारों को जाग्रत करने का काम किया 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आपने सक्रिय भूमिका निभाई तथा अंग्रेजी तानाशाही का विरोध किया जिसके परिणाम स्वरूप आपका वारण्ट निकाला गया, जगह–जगह आपको तलाश किया गया। बाद में आपको गिरफ्तार कर लिया गया और मुरैना में ही पुराने थाने में हवालात में रखा गया। कुछ समय पश्चात् आपको रिहा कर दिया गया। 1945 में आपको तहसील कांग्रेस का मुरैना में मंत्री बनाया गया, 1946 में जिले का मंत्री बनाया गया। 1947 में देश के स्वतंत्र होने पर चम्बल संभाग में भी स्वाधीनता की खुशी मनाई गइ। 1954 में आप मण्डी कमेटी के चेयरमेन रहे। सहकारी बैंक में 1950 से 1971 तक आपको अध्यक्ष नियुक्त किया गया। आप जिला पंचायत सदस्य भी रहे तथा 1994 को आपको स्वतंत्रता सैनानी संघ जिला मुरैना का अध्यक्ष नियुक्त किया गया।[10]

श्री गुलझारी लाल जैन

श्री गुलजारी लाल जैन का भी चम्बल क्षेत्र के मुरैना जिले में स्वतंत्रता सैनानी के रूप में महत्वपूर्ण पहचान है। श्री जैन का जन्म 12 अगस्त, 1926 को अम्बाह तहसील के पलपुरा ग्राम में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा (कक्षा–4 तक) पलपुरा में ही सम्पन्न हुई इसके पश्चात् वे मुरैना के गणेशपुरा वाले स्कूल में पढ़ने आ गये थे। यहां पर आपके मन मस्तिष्क पर गांधीवादी विचारधारा का गंभीर प्रभाव पड़ा और आप भी आजादी की टोली में शामिल हो गये। आपने अपने क्षेत्र में जनसाधारण के हृदय में राष्ट्रीयता के भाव जाग्रत किये आपका प्रमुख कार्य आजादी के दीवानों की टोली में शामिल होकर पर्चे बांटना था। जिसमें स्वतंत्रता के मंत्र लिखे रहते थे। जब वे कक्षा–7 में आये तब तक उनके हृदय में केवल एक ही स्वप्न था कि देश को कैसे आजाद कराया जाए। 1937 में आप कांग्रेस के सक्रिय सदस्य बन गए। 1942 में भारत छोड़ों आंदोलन में भी आपने भूमिगत रहकर स्वतंत्रता संग्राम में योगदान दिया और जनसाधारण में स्वाधीनता का अलख जगाने का कार्य करते रहे।

अध्ययन का उद्देश्य

चम्बल क्षेत्र को जहाँ एक ओर डाकुओं की शरण स्थली के रूप में जाना जाता रहा है वहीं दूसरी ओर भारत के स्वतंत्रता संग्राम में इसी क्षेत्र के अनेक स्वतंत्रता सैनानियों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है वह आज भी चम्बल संभाग के विकास में सहायक है। अतः इस शोध पत्र के माध्यम से उक्त स्वतंत्रता सैनानियों को राष्ट्रीय मंच पर लाना मेरा मुख्य उद्देश्य है।

निष्कर्ष

उपरोक्त विवरण में चम्बल क्षेत्र के मुरैना जिले के कुछ प्रमुख स्वतंत्रता सैनानियों का जीवन परिचय दिया गया है। सन् 1857 से लेकर राष्ट्रीय राजनीति में उत्कर्ष से लेकर 1947 ई0 तक चम्बल संभाग के मुरैना जिले के कुछ प्रमुख स्वतंत्रता सैनानियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। स्वतंत्रता सैनानियों के जीवन पर प्रकाश डालने के लिए प्रारंभिक स्त्रोतों के रूप में शोध क्षेत्र के अन्तर्गत जीवित स्वतंत्रता सैनानियों के साक्षात्कारों को तथा दिवंगत स्वतंत्रता सैनानियो के परिवार के सदस्यों के साक्षात्कार, तत्कालीन प्रकाशित समाचार पत्रों एवं उनसे सम्बंधित साहित्य का अनुशीलन भी प्रारंभिक स्त्रोतों के रूप में किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *एस.सी.राय चोधरी आधुनिक भारत का इतिहास, सुरजीत पब्लिकेशन दिल्ली, 1983 पृष्ठ 111*
2. *माखनलाल चतुर्वेदी, कर्मवीर, मासिक पत्रिका जबलपुर 1925 पृष्ठ 29*
3. *यशवंत सिंह कुशवाह, ग्वालियर राज्य की आजादी का संघर्ष, द्वितीय खंण्ड रामउजागर पाण्डेय, ग्वालियर पृष्ठ 42*
4. *मुंशी बाबूलाल जैन, स्वतंत्रता संग्राम सैनानी जिला मुरैना से लिए गए व्यक्तिगत साक्षात्कार दिनांक 8.7. 2007 के आधार पर।*
5. *डॉ. भगवान सहाय षर्मा, अम्बरीश मासिक पत्रिका, जोब प्रेस ग्वालियर,1992 पृष्ठ14*
6. *भीकाराम भारती स्वतंत्रता सैनानी, जिला मुरैना से दिनांक 17.10.2007 के साक्षात्कार के आधार पर।*
7. *स्वदेश दैनिक समाचार पत्र, ग्वालियर दिनांक 8.8. 2006 के आधार पर।*
8. *स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. श्री राधाचरण षर्मा जी के पुत्र डॉ.पी.के.शर्मा, अम्बाह से दि. 8.12.2017 को लिए साक्षात्कार के आधार पर।*
9. *डॉ. भगवान सहाय शर्मा, अम्बरीश मासिक पत्रिका, जोब प्रेस ग्वालियर 1992 पृष्ठ 17*
10. *दैनिक भास्कर, दैनिक समाचार पत्र, ग्वालियर 11.08. 2006 के आधार पर।*